विश्वास, संघर्ष और खेलो इंडिया के सहारे निखरी हैं लद्दाख की पहली अंतरराष्ट्रीय स्पीड स्केटर स्कार्मा त्सुल्टिन

2023 में गुलमर्ग में आयोजित खेलो इंडिया विंटर गेम्स स्कार्मा त्सुल्टिन के करियर के लिए बड़ा मोड़ साबित हुए

लेह (लद्दाख), 21 जनवरी: जब स्कार्मा त्सुल्टिन ने 2018 की सर्दियों में पहली बार आइस स्केटिंग के जूते पहने थे, तब न कोई योजना थी, न दबाव और न ही कोई बड़ा सपना। वह एक स्कूल छात्रा थीं, जो लद्दाख में आयोजित 15-दिवसीय विंटर स्पोर्ट्स ट्रेनिंग कैंप में अन्य बच्चों की तरह पहली बार आइस स्केटिंग आज़मा रही थीं। उस कैंप में उन्होंने स्केटिंग की बुनियादी तकनीकें सीखीं और यह उन्हें सहज लगी। उसी कैंप ने उन्हें एक विचार भी दिया, जो आगे चलकर खेलो इंडिया विंटर गेम्स की बदौलत हकीकत बना।

सर्दियां आतीं, स्केटिंग के जूते निकलते और मौसम बदलते ही ज़िंदगी फिर सामान्य हो जाती। लेकिन 2021 में यह सिलसिला बदला। लद्दाख में सर्दियों के दौरान स्कूल बंद रहते हैं और अधिकतर खेल गतिविधियां थम जाती हैं, लेकिन आइस हॉकी और स्केटिंग हर जगह दिखती है। लेह के जमे हुए गुपुख प्राकृतिक तालाब खुले खेल मैदानों में बदल जाते हैं। स्कार्मा अपने भाई के साथ वहीं स्केटिंग करती थीं, जैसे इस क्षेत्र का कोई भी बच्चा करता है। उन्हें यह एहसास नहीं था कि कोई उन्हें देख रहा है।

कोच अब्बास नोरदक प्रतिभा की तलाश में थे। उन्होंने स्कार्मा को देखा, चुना और उसी पल उसकी राह चुपचाप बदल गई। इसके बाद स्कार्मा नियमित विंटर कैंप में भाग लेने लगीं और एक साल के भीतर ही, कोच नोरदक के मार्गदर्शन में उन्होंने गुरुग्राम के आईस्केट में आयोजित 17वीं राष्ट्रीय स्पीड स्केटिंग चैंपियनशिप में हिस्सा लिया।

स्कार्मा उस पहले राष्ट्रीय अनुभव को 'खराब' बताती हैं। यह उनका पहली बार कृत्रिम बर्फ पर उतरना था और प्रतिस्पर्धी खेल की विशालता से उनका सामना पहली बार हुआ। माहौल, स्तर और माहिर खिलाड़ी उन्हें हिला गए। लेकिन प्रशिक्षण जारी रहा-गर्मियों में मसल ट्रेनिंग, रोलर स्केटिंग और फिटनेस पर काम होता रहा।

उनके पिता कई बार उन्हें 20-40 किलोमीटर दूर रोलर स्केटिंग अभ्यास के लिए ले जाते थे, जबकि उनकी मां उन्हें हमेशा ज़मीन से जुड़े रहने और पदकों से ज़्यादा खेल के आनंद के लिए खेलने की सलाह देती थीं। इसके बाद स्कार्मा ने 18वीं राष्ट्रीय स्पीड स्केटिंग चैंपियनशिप में भी हिस्सा लिया, हालांकि वहां उन्हें खास पहचान नहीं मिली।

असल मोड़ 2023 में गुलमर्ग में आयोजित तीसरे खेलो इंडिया विंटर गेम्स में आया। पहली बार लद्दाख से सात एथलीट इस प्रतियोगिता में उतरे। स्कार्मा ने जूनियर गर्ल्स (15-19 वर्ष) 1000 मीटर शॉर्ट ट्रैक स्पीड स्केटिंग में रजत पदक जीता।

यह पदक केवल पोडियम के लिए नहीं था, बल्कि आत्मबोध के लिए था। यहीं से उनका भारतीय स्पीड स्केटिंग दल के लिए चयन हुआ और उन्होंने सिंगापुर में आयोजित 2023 साउथ ईस्ट एशियन चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जिसके लिए प्रशिक्षण फिलीपींस में हुआ।

वह बताती हैं, "मेरी अंतरराष्ट्रीय यात्रा यहीं से शुरू हुई। यह मेरा पहला अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट था और मैं टीम की इकलौती लद्दाखी खिलाड़ी थी। यह आसान नहीं था। मुझे खुद को अलग-थलग महसूस हुआ।

भाषा एक बड़ी बाधा थी और स्वभाव से संकोची होने के कारण वह भारतीय टीम के भीतर भी संवाद करने में संघर्ष कर रही थीं।

जापान, इंडोनेशिया, चीनी ताइपे और चीन के खिलाड़ियों को देखकर वह डर गई थीं-उनके पेशेवर उपकरण, कस्टम-मेड स्केट्स, कद-काठी और आत्मविश्वास ने उन्हें प्रभावित किया। उनका प्रदर्शन, उनके शब्दों में, "अच्छा नहीं था" और वह 1000 मीटर में 11वें स्थान पर रहीं। लेकिन परिणाम उस पल की परिभाषा नहीं बना। खेलो इंडिया उनके लिए वह मंच बन गया, जहां से उनकी अंतरराष्ट्रीय यात्रा ने उड़ान भरी।

इसके बाद एक दौर ऐसा भी आया, जब उन्होंने खुद से पूछा कि क्या यह खेल उनके लिए है। पढ़ाई में गिरावट आई और बुनियादी स्तर से आगे बढ़ने की कोशिश किसी दीवार से टकराने जैसी लगी। फिर वह घर लौटीं। लेकिन हवाई अड्डे पर जो दृश्य उनका इंतजार कर रहा था, उसने उन्हें भीतर तक छू लिया।

परिवार, दोस्त, गांववाले और गोबा (गांव प्रमुख) उन्हें रिसीव करने आए थे। उनका स्वागत पदकों के लिए नहीं, बल्कि भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया गया। उनके क्षेत्र के एलएएचडीसी पार्षद ने उन्हें सम्मानित किया और थिकसे मठ के मुख्य चेम्बरलेन गेशे-ला ने उन्हें चाय पर बुलाकर उपहार दिए। इस सामूहिक समर्थन ने उन्हें वह एहसास दिलाया, जो पहले कभी नहीं मिला था—और यही समर्थन उनके खेल से जुड़े रहने का सबसे बड़ा कारण बना।

चौथे खेलो इंडिया विंटर गेम्स (लद्दाख) में स्कार्मा ने अपनी लय पाई। महिला टीम रिले में स्वर्ण (लद्दाख का पहला शीर्ष पोडियम), लॉन्ग ट्रैक 500 मीटर में रजत, मिक्स्ड रिले में रजत और लॉन्ग ट्रैक में कांस्य पदक आए। अगले साल, पांचवें संस्करण में, उन्होंने 1000 मीटर शॉर्ट ट्रैक में अपना पहला व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीता। यह एक ऐसा पल था जिसे वह हमेशा संजोकर रखेंगी।

उनके कोच अब्बास नोरदक उस समय हार्बिन (चीन) में भारतीय आइस स्केटिंग टीम के साथ हेड कोच के रूप में मौजूद थे। जब उन्हें स्कार्मा की जीत की खबर मिली, तो वह बस इतना कहती हैं, "सर खुश थे।"

उसी वर्ष यूटी लद्दाख की टीम ने पहली बार कुल पदक तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। इसके बाद स्कार्मा ने 2024 में जकार्ता में आयोजित एशियन ओपन शॉर्ट ट्रैक स्पीड स्केटिंग ट्रॉफी में भी भाग लिया।

स्कार्मा बताती हैं कि कोच अब्बास नोरदक उनके लिए प्रेरणा, मार्गदर्शक और सहारा सब कुछ रहे हैं। उन्होंने वर्षों तक बिना फीस लिए लद्दाख के कई खिलाड़ियों को प्रशिक्षित किया है और कई बार खर्च भी खुद उठाया है। वह कहती हैं, "हमने जितनी बार ट्रेनिंग छोड़ी, सर ने हमसे ज़्यादा मेहनत की।"

आर्थिक सीमाएं आज भी कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भागीदारी को मुश्किल बनाती हैं। लेकिन खेलो इंडिया विंटर गेम्स जैसे मंचों ने उन्हें पहचान, आत्मविश्वास और अनुभव दिया। इसने उन्हें "बेसिक से इंटरमीडिएट" की रेखा पार कराई—हालांकि अब वह स्वर्ण पदक जीत रही हैं।

अब, खेलो इंडिया विंटर गेम्स के छठे संस्करण में, स्कार्मा त्सुल्टिन 500 मीटर और 1000 मीटर शॉर्ट ट्रैक सहित रिले स्पर्धाओं में भी उतरेंगी। उनकी यात्रा महत्वाकांक्षा से नहीं, बल्कि निरंतर प्रशिक्षण, खेलो इंडिया जैसे स्थायी मंच और उस समुदाय से जन्मी, जिसने उन्हें सबसे ज़्यादा ज़रूरत के समय अपना समर्थन दिया।

और ओलंपिक तक पहुंचने का सपना (जिसे उन्होंने सात साल पहले पहली बार स्केटिंग के जूते पहनते समय देखा था) आज सिर्फ उनके परिवार या कोच की नहीं, बल्कि पूरे लद्दाख की उम्मीद बन चुका है। शायद एक दिन, अपने नाम के अर्थ के अनुरूप (जिसका लद्दाखी भाषा में मतलब 'सितारा' है) स्कार्मा त्सुल्टिन न सिर्फ खेलो इंडिया, बल्कि ओलंपिक मंच पर भी चमकें।

AIR
HIMALAYAS